

श्रीगोपीजनवह्नभायनमः।  
अथनवह्नोसलिय्यने।  
श्रीगोकुलेशो जयमि ॥



श्रीस्वामिनीजीकीसहचरीकुं  
आदिपूर्वकओरसखीपुछन  
हं जेहेसुखीमेरीस्वामिन

जुलक्ष्मीहनेअधिकहे॥ निनसो  
राकुसोकेसेंनूनसंगहोन  
भयोसोकहो॥ १॥ ताकोउत्तरक  
हने॥ हेसखीकसोदरीइहां  
नोटं जानहीहेमेंनोसोकहण  
हं। यहकथा नोहमदासीओकी  
जीवनरूपहीहं॥ २॥ निकुंजमें  
स्वामिनीजूकीसखीएकठी  
होइकरि। फूलनकीसिज्याकी  
रचनोकरनेहें॥ नहां एकसखी  
नेपक्षपुछ्यो॥ दूसरीअंतरंग

हु. न.  
२  
सरणीनेक लो॥ सो सब सरणीने  
सुन्यो॥ नव अपनी अपनी की  
सुधि आई॥ नव भी निके भरक  
रि वर्षा सो होत भई॥ ए से स्नेह  
को भर दे वि के लक्ष्मी ह को म  
नह स्यो जा न हो॥ नव ने वर दान  
ठाकुर ने दी यो ह गो वे दिवस वि  
खें॥ ना दिन को ब्रज सुंदरी यन  
के नेत्रक मल के भाग्य को फल  
एक ब होइ के॥ श्री ज सो दा जी  
विरें प्रगट होत भए॥ नव ने व

ज सुंदरी यन को गो ठाकुर के  
विषें सह जही भी नि हो॥ परि ठा  
कुर को श्री भी या जी विषें अधि  
क अनु राग होत भयो॥ **सर्व**  
**ने प्रक्यो ह गो ना को उतर क**  
**लो॥** ठाकुर प्रगट भए पा छें  
क वह क श्री कालिं दी नी के पु  
लि न विषें के से सो ह न हो॥ पुलि  
ने ज हां क मल जा को धन हो॥  
आ सो द बहन सी न ल मंद सुगं  
ध वि वि ध वा यु व ह न हो॥ नाइ

शु. न. ३  
शहंदावन विरवं श्री प्रीया जी  
आपुनी सखा के अनंत जूथ  
लेके प्रियाजू आवन भई ॥ न  
हां आई के देखें गो ॥ ठाकुर गो  
पीजननके असंख्यान जूथ  
नसों विहार करन देखे ॥ ५ ॥  
नहां प्रियाजू की सहचरी प्रिया  
जूनें ठाकुर देखे ॥ नवबहुन  
काल लोचि कि नदृष्ट सहिन  
श्रीमुखमें अगाधिसमुद्रमें  
दृष्टो ॥ पहिले ने जल गो ॥ पाछे

शु. न.

चिनबंधानो ॥ नवमृगानय  
नीकी इष्टि ठाकुरके बदनचं  
दविषे बहुत काल लों परत भ  
ई ॥ नवमृगाने नीके बदनचंद  
पर ठाकुर जी हकी इष्टि परत  
भई ॥ निमेषा निमेष दोऊन  
को होत भयो ॥ ६ ॥ जवही चा  
बिने एकत्र भयो ॥ नवही अ  
लोकिक भावके समूह प्रगट  
होन भए ॥ नवपीयाजू की आ  
टअवस्थाके भाव प्रगट होत

भए॥संभना॥जडना॥सोसां  
च॥आलस्य॥ज्यंभए॥विके  
ल्यना॥आनुरना॥हर्षा॥एहो  
नभए॥ठाकुरसोन्ननप्रेम  
करि पूरिहृदयभयो॥नानेञ्च  
वकासनाही॥सुंदरठाकुरके  
भावसहितकटाक्षहृदयकेभ  
नरपेटे॥नानेप्यामीजूअनिश  
यअभिलाष॥सबसस्वीकोक  
ल्याणकोविस्मार्थो॥याप्रका  
रसस्वीपरस्मरवानिकरनहे

सोआसिर्वाददेनहो॥मेंठाकुर  
कहंसुंदरमनोहरकमलएक  
हीवारहनैदेरव्यो॥अबकेहकरि  
हमसंयुक्तनिरूपमश्रीमुख  
दूसरिवारनिकटनेदेखायनो  
जवदंदेखावेगीनवनोकहोमें  
कहादेउं॥कहेगोबडीवस्तुमेरे  
पांणहे॥सोप्राणहरेवेदकरिक  
हनहो॥जोठाकुरदृष्टिकरिचुग  
यलीये॥सोमेंनेरीअणीरहूं  
गी॥८॥याप्रकारगाइयाणी

५  
हुने  
आधे आधे वचन सों प्या सी जू  
के कहे सुनिके चतुर सह चरी  
ने सव गुण ठाकुर को निकट  
देखावन ॥ श्रीप्रियाजूको निक  
ट दिखावन भई ॥ के सी सह च  
री ॥ जे प्रथम मिला प्रकी वान  
कहत है सो सखी ॥ देखावन  
श्रीप्रियाजूको कहत है ॥ इहां श्री  
हंसावन विवेहरी अ संख्या न  
ब्रज सुंदरी न के साथ की डाक  
रत है ॥ जे से मन गज राजक

रिणी न सों श्रेष्ठ की डाकरत हो  
इ ॥ नहां को टिकंदर्य को मान भ  
गाकरि विलास करत है ॥ ५ ॥  
ठाकुर के सेहें ॥ चंचल विलो  
चन विषे भाव पूर्वक कोऊ क  
ब्रज सुंदरी नेत्रक मल न करि  
ठाकुर की इजाकरत भई ॥ श्री  
रठाकुर अत्यक्त गान करि ॥ कु  
मारी अति — सांगी नाई बहु  
नपी डाबहन संताप को प्राप्ते  
न भए ॥ सोवाणी करि कहा कहै

वहुकालों विरहकरि प्रिया  
तु अत्यंत - स्यकरि ॥ विरह  
घातकों सहि नाही सकना ॥ ना  
नें कोऊ एक निकुंज विषे केसे  
हैं निकुंज गुंजा रकरत हे भ्रम  
रजहां जहां ताद सनिको आश्र  
यकरिकें ॥ छिपकें एकांत होइ  
के वेठे ॥ तहां दीनना मनमें ध  
रिकें आधुनी अनिरंग सखा  
कछू कहत भई सो आगे कहें  
गे ॥ हे आली एक जुवनी केजू

प्रसाधही विहा रकरत हो ॥ न  
हां तहां अत्यंत को मल विगुण  
वायुसे वाकरत हो ॥ कहा कहं मे  
री बांणी के विसे नां दीये ॥ ठाकु  
रमेरे मनमें खेलत हो ॥ हे सह  
चरी मेरी इष्टि गो ठाकुरकी सुं  
दरना ओ आधुर्धना करं एण  
करत हो ॥ ओर मनोहर हास्य वि  
षें इष्टि परत मात्र जातरही ॥  
जान भई नवगानि आगे चलै  
सो कोन ॥ ओर सर्वांग ठाकुरके

हुं न ७

सेहं॥ कोटिकंदर्पसोदर्याभुनस  
हिन श्रीमुखतोभेदेव्योहीना  
ही॥ भेंजाननहं जोयहकंदर्प  
गटभयोमानो॥ यानेयाकेनें  
नवाणमोडूं अत्यंतव्यथाकह  
नहो॥ इनकीवानसखी प्रीतिक  
ही॥ एसीप्रियाजूकोहोनभई॥  
ठाकुरकेसेहं॥ सुंदरीनसोत्रम  
णकरिठाकुरकीवनमालावि  
लुलिनविहारकरनभई १२  
ठाकुरकोऊ सुंदरीकेसाहेय

हिवेकुंधसतहो॥ इननें एकसुंद  
रीनेंजोपी आनि आगेराखी॥  
इतनेंबहनहास्यहोनभयो॥ का  
हमुखसुंदरीकीनीवीदेखतहो  
॥ सोभयकरिलिलिनहेनेत्र॥ ना  
सोत्रमतहो॥ सोपीयसखी श्री  
प्रियाजूठालुखवनविषेअने  
कसुंदरीसोविलासकरनहो॥  
निकुंजविषेवेठहो॥ तहांअंजुल  
येकरिखावनभई॥ कोऊएक  
सुंदरीविरहकरिदूबरी अनि

स्यनाथाकुरके विरहकरिदूब  
री अति - स्यनाथाकुरके अनु  
प्रास्यकरि आई भई ॥ सो गांन  
विद्यामें अनिनि पुनहो ॥ रनि सं  
गाममें धीरहो ॥ १३ ॥ को ऊ सुंद  
रीको अंगद नू दरि पूज्यो ॥ वि  
लासकरिसु सु चंभन पाछे ॥ का  
ह एक सुंदरीको कर ग्रहण करि  
नाके साथ आलस्य संचलिन  
इगमगत चरण धूणीयमान  
नयन ॥ आलसवलि नलीला

करान चलनहो ॥ हिग धेना दृश  
कस्य आनंद सो नरो मनोरथ  
हरि रास मंडल में पूर्ण करि  
॥ १४ ॥ के से हैं ठाकुरक मल्ल  
नं सुकुमार ॥ एसें ठाकुर श्री  
कालिंदी जीके उपवन विषे  
विगुण वासुवहनहो ॥ नहां वि  
लासको करनहो ॥ ठाकुरके से  
हें ॥ कालिंदी जीके नट विषे उन्न  
नहो ॥ भ्रमरके दृश्यनेसें सुगंध  
पुष्पके भूषणनाकरि ठाकुर

हुं न  
२

पूजित हैं। और ठाकुर अथवा  
है। मधुर स्वर करि सुर लिका  
व जावन है। नाकरि मोहें जा  
न। गोपीजन एनाइ शहरि सो  
तुझा रोअ संव्यान मनो रथ  
पूर्ण करो आसि वाद हे न हो।  
इति श्री पथ मह आस सं पूरा  
॥ १ ॥ श्री ठाकुर जी के सेहें  
रतिके लए भरकरि हार टूटि  
राए हों। सो निके हार एसे ठा  
कुर हरे विवें श्री प्यारी जीव

हुन काल सो देवि रहो। देवो भो  
कोंछां दिये से उन्मत्तके लि अंभ  
गोपी साथ करन है। गोपिन प  
रइ सकरि उहां रहि वें कुं आस  
क्त भए। और ठाकुर विषें अथं  
त आसक्त के वसनें जाय हना  
ही सकन। आ प्रकार पीयाजूके  
मन दोलाय मान होन भयो।  
नदनं मनहांने एक और स्थ  
ल आइके। कोऊ एक निकुंज  
भवन की लीला नामें आइके।

केसीलगाजाकेमकरंदपान  
करिउत्तमभएहेंभमरनानि  
कुंजकेसिरवरपरश्रायमान  
गानकरनहे॥त्रिविधवायुवर  
नहे॥निसर्गवेहाईसर्वाकुं  
संबोधनपीथाजूनेजकमल  
कुंकलुकमुदिनइष्टिहोइकेवा  
रवारकधूसरवीमतिकहनभ  
ई॥यहभेरोमनसहचरीएक  
क्षणटाकुरकोस्यजननाही॥  
ओरअस्यनआनुरहहे॥ओर

टाकुरकेत्रिविधभावकरिक  
टाशकरिद्वोडेहेंवांन॥टाकु  
रकेइहांभावकरिमेरीगतिपं  
गुहोइगईहो॥गानेंचलननाही  
मधुरअथक्त॥मधुरनादकरि  
मुर्लीनादकरिविशेषमोहि  
नकीनेहे॥भ्रजजुवनिनकेजूथ  
गासोंविलासकलिकरिगाके  
वसहोइगएहेटाकुर॥गोहभेरे  
नेत्रकोंदेरिकरिअनुंनसुख  
भयो॥ओरमनुष्यसृष्टीगणक

पंथी एनो चिन्न खिखे धनरेसे  
 करिगखेहे ॥२॥ हेसखी ठकु  
 रकेसेहे ॥ जेसेहठी लोउन्मन  
 महागजराज होइनेसे अटक  
 नचलगहे ॥ आपुनेगविसे ॥  
 मंथरगनिसोविलासकरन ॥  
 नाइशाठकु रमंदहास्यकरिकं  
 रपर्काहगोपिकाभावकोकरे ॥  
 ओरईक्षणकीविचक्षणको  
 कहांकोंकहिये ॥ ओरमुखचं  
 इकीसोभा ओरवचनकीचातु

शीसवलक्षणकोजीनेहो ॥ अ  
 मुनकेसमूह आच्यर्षकरिक  
 हतहो ॥ जोएगाइसवस्त्रनोवि  
 भुवनविषेओरनहीं ॥ ठकु रजी  
 नेअपनेलिलाटविषेसुंदर  
 कस्त्रीकोनिलककीनोहो ॥ ना  
 रुपरप्रियाजूकोमुक्ताफलको  
 चंदलोकोंनिलककेनिमिन  
 धरनभए ॥ प्रियसखीनेप्राण  
 पेष ॥ ठकु रनेआपनोअदला  
 वदलाकीनोहो ॥ नोसोईर्षको

कहावचनकरिकस्यो॥ जाय  
ठाकुर ऊंचेस्वरगानहहो॥ ला  
समेंकाहगोपीनेविगाटभाव  
करि निकट मनोरथकरनभ  
ई॥ ठाकुरकेसेसुषरगावनहो  
जोस्थिरनररहो॥ श्रीवाकोभूष  
णवेषरहो॥ एताइसगानकर  
नमनकोहरनहो॥ ३॥ ठाकुरके  
सेहो॥ जोवाभपयावनश्रीवाश्री  
रऊंचेकुंचलनहो॥ ननकुचक  
अरुटेढहेंचिनवो॥ औरसंको

जोहैअधरपन्नव॥ औरसुरादि  
काधरीहो॥ अधरऔरनकसोरा  
ऊंचेकुंफूलहो॥ एताइसहोइके  
भवविषीपचरणकरनहो॥ त्रिलि  
नचभंगहोइ॥ नवआनंदसोसे  
वाभोज्य॥ सुधाकोंपूर्णकरिदु  
रिकरनहो॥ नवहैअंभोजालक्ष्मी  
नाहीजाननजोएताइसनवप  
कारकोसहायकरिकृष्णविजग  
नीकोकहाकीयोचाहनहो॥ ४॥  
अवपीयाजूकहनहो॥ जोठाकुर

हु.न.  
१३

के प्रति अंगकी वाता इहो ॥ एक  
क अंगको सौंदर्यको जन जाय ॥  
कोटिकंदर्पके मनको हरो ॥ परि  
कत्रभंगके संस्थानको तो कहव  
रणनकरहं ॥ जामें सकल सोभा  
को विकानो हो ॥ जाते मेरी दृष्टि अ  
र सरीर ॥ और चतुद्रयमना ॥ ताके  
विवेक धैर्यकी गतिको ही ॥ ललि  
नत्रभंगमूर्त्तमेने प्रगट भई है  
सो मेमानत हुनी जो विधानने  
एनाइस विधिकनी जो इव्यस

रीरमनादिककी गतिके भंगकी  
नो हो ॥ जाते मे एनाइस पंगुहो ॥  
राकुरको हास्यसंयुक्त जो भाषण  
करत श्रीसुखने अमोद निकस  
नहो ॥ ताके पानकरिमन भए है  
जो भ्रमरा ॥ ताकरि ठकुरवेवन  
हो ॥ एनाइस ठकुर यह वे एनाही  
पूरतग ॥ तो कहावे एनाइस द्वातकी  
मिसकरिमोको अधरा मुरपूर  
नहो ॥ क्षोमोहिको वेणुपरि नहो ॥  
काहेने जो मेरे बडेन नसे अनुभा

हु.ने.  
१४

जा निमिसह अंगरायक रिसे  
मनिहो ॥ गानेची चनेरो मनहु  
रावनभए ॥ गाठोर आपु और  
अपने अधरकरि पूर्णकरन  
हे ॥ गारि मो कोरस भाववि  
भाव तो दुःख हइ रिकी यो न जा  
य ॥ तो अली मंकरा करुं ॥ हे आ  
ली मधुसंथान ॥ ठाकुर कंदर्प  
को दि आदिक्य जाव एह हे ॥ एता  
इस ठाकुर को मोसाथ्य रमण क  
रवाई ॥ मे के सी हं रस भाव शुक्त

हं ॥ और मन हे ॥ छुइ घंटिका ठा  
कुरकी मरुसरन कह हे ॥ नि कुं  
ज मंछि पिके विचि चक्रु सुमकी  
शेयाकी रचना की नी हे ॥ गहाका  
ह प्रकार करि ले चलो ॥ तवरनि  
के लिकी उक्तं टगा हे खि हं सेंगो  
तव मो को कछु एक ल जा हो इगी  
॥ भाव मे हे ॥ मेरो मन मरुसरन ह  
र्यो हे ॥ सो के से हे ॥ जो आग ले को  
रिजा इवे मे चतुर चूजा मलि हे ॥  
तव मे के सी हं जो अत्यंत मधुर

हास्यकविकें कोमलवाणीकी  
 वोलूंगी ॥ नवठाकुरमोकोवहु  
 न आदरसों कुसमझेयापर  
 वेसकसोंवेगों ॥ ठाकुरमोऊपर  
 कृपाकरेंगों ॥ नवमेरसप्रकार  
 सोंसमाधांनकरूंंगी ॥ ठाकुर  
 मेगों अंगीकारकरेंगों ॥ नवमे  
 धीरनेहंधीरहं ॥ नवठाकुरभूल  
 किनहोंहिगों ॥ नवमेथीकटिमे  
 रवलाघुघरु अनिशहायमा  
 नहो ॥ नवसित्काराहिक अनि

प्रगटहोनहों ॥ ठाकुरबंधाहिकक  
 रिमोहुंस न्यानकरनहों ॥ हे आली  
 रसलीलाविषेंमेंकेसीहं ॥ कोकि  
 लापारपतिकेस्वरूपकृजन ॥ न  
 हूकृजनाहिककविकें ॥ ठाकुरके  
 मेहेंअमजलकणिकाकदिपूजे  
 हेथीमुखकमल ॥ ठाकुरजीके  
 केलिअमनेअभिनहोइ ॥ परमा  
 नंदकोंयापहोनभए ॥ ओरमेरी  
 ननलनाकीहसुधिरहननभई  
 एताइसथीयाजूकोंकहोंगी ॥ न

हुने  
१६

वपीयाजूनेकसो जो ॥ या प्रकार  
ठाकुरकी मोहप्राप्त करिसो सह  
चरी औरसवरी प्रियाजूकीसह  
औरसवगोपीजनकीसहकी  
मिलिकेवार्त्तिकनहो ॥ सो आनि  
वदिदेनहो ॥ अबठाकुरकेसहो ॥  
आधोपीनांबररवसिपरयो ॥ औ  
रआधोतिलकसिदिगयोहो ॥ औ  
रस्वेदांकुनपरहो ॥ सुंदरीनकेमन  
हरनभएहो ॥ फिरठाकुरकेसहो  
जेवगोपीयासरसके अधिककर

दिवा सुंदरीनकेवासहोइगएहो  
ठाकुर ॥ एनादशा सुंदरीनहुं औ  
रठाकुरहुंदेखनहुं ॥ मेनबहुं सु  
खप्राप्तकीपदवीकृपामहोतह  
दुर्माकोहेतुहो ॥ परिपीयाजूकोई  
षानाहीहोन ॥ सोसर्वंगभाक्को  
लक्षणहो ॥ पीयाजूकोकल्पदक्ष  
केनरुवरकेसुगंधकोसोरभा ॥  
औरकालिंदीजीकीसीतलना  
जलकणिकाकरि ॥ लक्ष्मीकोम  
नहस्यो जानहो ॥ नाइसबयानसु

गंधके भरकरि हलवे बहु नहे ॥  
 एसे सुखसेही प्रीयाजूको माहा  
 नापसामान्य लगानहे ॥ विरह  
 सि ॥ एसे फुले विविध पुष्प  
 मरसहिन ॥ अरी यह चंद्रमार्गे  
 कि योह केह सुख नाही न पाव  
 न तो कलकलं कहां जाऊं ॥ मेरे  
 प्राणप्यको संगके सेही ईशो  
 सो कहो ॥ १० ॥ तो की डारु पही अ  
 गाधिसंभावापन्नरुणी नाको  
 के लिविलासकरि चुचायराखे

है ॥ नहं प्रीयाजूके मुरवां भोज  
 की सोभाके सीहे ॥ कंदर्पको गर्व  
 दुरिकरो ॥ एना इस प्रीयाजूको मु  
 खकमलको अबलोकनकरि  
 प्रगट भई जो लजा ॥ और प्रीको  
 हास्य ॥ सोनु हारो पूर्ण मनो रथ  
 को करो ॥ आसि वादको दे नहो ॥ १२  
 ॥ इति श्री द्विगीयह व्याससं प्र  
 णी ॥ २ ॥ ॥ श्री ॥ मदसहदनम  
 हाधीरवीर ठाकुरह श्री प्रीया  
 जूको अपने सहयमे धरिके आ